Raj Express (Indore), 19th August 2025, Page – 04

पहल

आईआईटी इंदौर और एसएफआरआई ने मानव वन्यजीव संघर्ष का समाधान करने एमओयू किया

एमओयू के माध्यम से मप्र में वन प्रबंधन बनेगा मजबूत

● इंदौर/ राज न्यूज नेटवर्क

आईआईटी इंदौर और राज्य वन अनुसंधान संस्थान (एसएफआरआई) जबलपुर ने एआई व उन्नत प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके मानव वन्यजीव संघर्ष का समाधान करने के लिए एमओयू किया। वन्यजीव संरक्षण और सतत् वन प्रबंधन की दिशा में ऐतिहासिक कदम उठाते हुए, एमओयू पर साइन किया। सहयोग का उद्देश्य मानव वन्यजीव संघर्ष को कम करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और अन्य अत्याधुनिक तकनीकों का लाभ उठाना है, खासकर उन क्षेत्रों में जहां रेलवे लाइन विस्तार परियोजनाओं और वन्यजीव प्राकृतिक वासों के पास अन्य रैखिक बुनियादी ढांचा गतिविधियों से

प्रभावित क्षेत्र हैं। इस साझेदारी से मध्यप्रदेश में वन प्रबंधन मजबूत होगा।

क्षेत्र स्तरीय कार्यावयन को एकीकृत करने पर केंद्रित: एसएफआरआई ने मध्यप्रदेश में वानिकी और वन्यजीव अनुसंधान में लंबे समय से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जबकि मध्यभारत का एक प्रमुख प्रौद्योगिकी संस्थान, आईआईटी इंदौर, सामाजिक कल्याण के लिए नए समाधान विकसित करने में अग्रणी रहा है। यह साझेदारी इस क्षेत्र में वानिकी और वन्यजीव अनुसंधान को आगे बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

दोनों संस्थानों के नेतृत्व में, यह सहयोग अनुसंधान उत्कृष्टता, नए तकनीकी समाधानों और क्षेत्र स्तरीय कार्यावयन को एकीकृत करने पर केंद्रित रहेगा, ताकि वास्तविक रूप से प्रभाव डाला जा सके। एमओयू के दौरान एसएफ आरआई के निदेशक प्रदीप वासुदेव और एसएफआरआई के वैज्ञानिक डॉ. अनिरुद्ध मजूमदार के साथ-साथ आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रोफेसर सुहास एस. जोशी, अनुसंधान एवं विकास के डीन प्रोफेसर अभिरूप दत्ता और खगोल विज्ञान, खगोल भौतिकी एवं अंतरिक्ष अभियांत्रिकी विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष डॉ. सौरभ दास भी उपस्थित थे।

वानिकी व वन्य जीव अनुसंधान को मिलेगा बढ़ावा

प्रोफेसर जोशी ने वन्यजीवों पर बढ़ते खतरों पर गहरी चिंता व्यक्त की और जैव विविधता की रक्षा व मानव पशु संघर्ष को कम करने के एसएफआरआई के मिशन को आईआईटी इंदौर की पूर्ण सहायता की पुष्टि की। वासुदेव ने इस बात पर जोर दिया कि आईआईटी इंदौर के साथ साझेदारी से मध्यप्रदेश में वन प्रबंधन मजबूत होगा, वानिकी व वन्यजीव अनुसंधान को बढ़ावा मिलेगा और गंभीर चुनौतियों के समाधान के लिए आधुनिक तकनीकों के अनुप्रयोग को बढ़ावा मिलेगा।